# आर्तनाद

## काव्य संग्रह

टी.आर. त्रिपाठी "रूद्र"

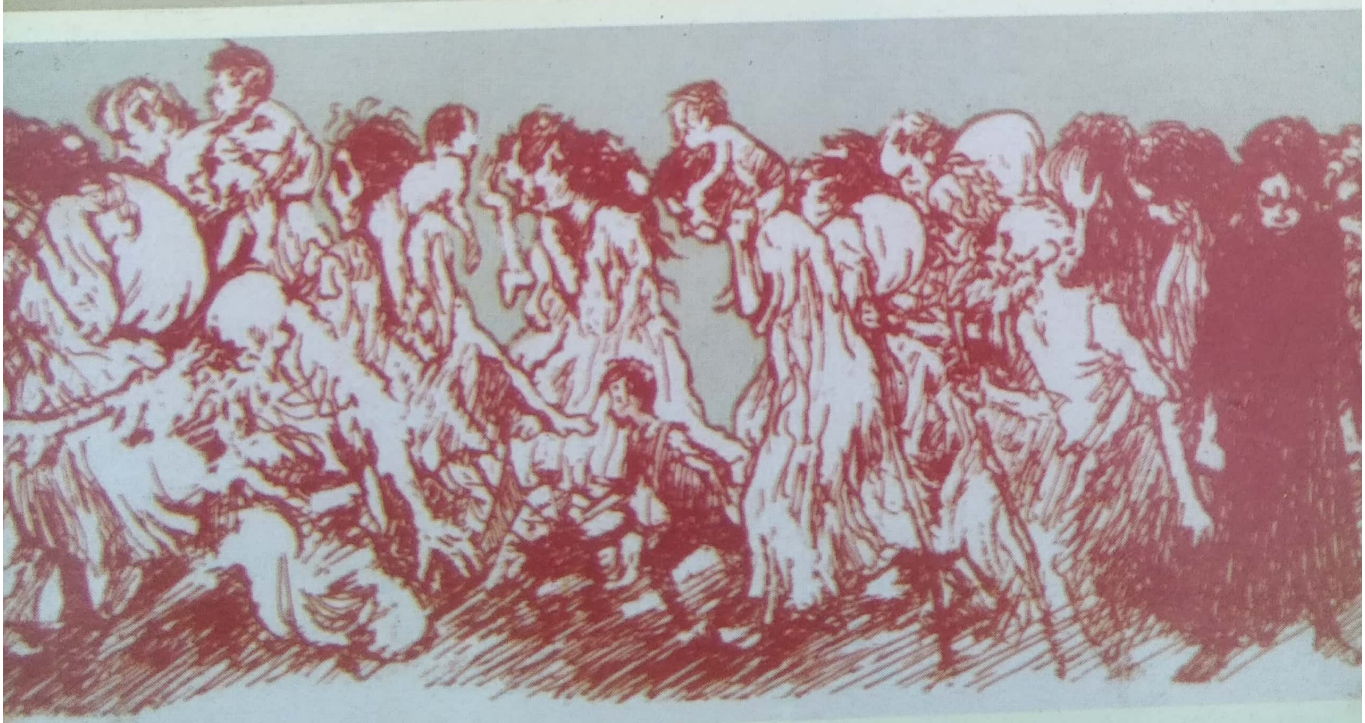

Scanned with OKEN Scanner

# आर्तनाद

## काव्य संग्रह

टीकाराम त्रिपाठी 'रुद्र'

ग्लोबल बुक्स ऑर्गनाइजेशन
दिल्ली-110031 (भारत)

Scanned with OKEN Scanner

# आर्तनाद : काव्य संग्रह

© टीकाराम त्रिपाठी 'रुद्र'

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी रूप में चाहे इलैक्ट्रॉनिक अथवा मैकेनिक तकनीक से, फोटोकापी द्वारा या अन्य किसी प्रकार से पुनर्प्रकाशन अथवा पुनर्मुद्रण, प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

आईएसबीएन : 978-93-80570-03-7

प्रकाशक : ग्लोबल बुक्स ऑर्गनाइजेशन
42, एकता अपार्टमेंट, गीता कालोनी
दिल्ली-110031 (भारत)
दूरभाष-011-22453953, 22445526, 9899071610
ई-मेल : rkgpost@gmail.com
वेबसाईट : www.academicpratibha.com

मूल्य : 350.00

प्रथम संस्करण : 2010

शब्दांकन : एब्स (ए.बी.एस.) कम्प्यूटर्स, शाहदरा, दिल्ली–110032

मुद्रक : एच. एस. प्रिंटर्स, नई दिल्ली–110032

Scanned with OKEN Scanner

# आर्तनाद - अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| | कवि की ऊर्जा और ओज | *(v)* |
| | विलाप और आनंद साथ-साथ | *(viii)* |
| 1. | आर्तनाद | 1 |
| 2. | कबीर | 3 |
| 3. | जो रूठे हैं | 8 |
| 4. | स्त्रीलिंग से पुल्लिंग तक | 9 |
| 5. | एक दृष्टिकोण | 10 |
| 6. | मुखिया के लिए | 11 |
| 7. | पिकनिक | 15 |
| 8. | सूरज जगे करोड़ हैं | 21 |
| 9. | काला-धन | 23 |
| 10. | बदतमीज | 25 |
| 11. | कवित्त | 26 |
| 12. | कश्मीर | 27 |
| 13. | सरकार | 28 |
| 14. | फंदे सौ | 29 |
| 15. | छद्मश्री | 32 |
| 16. | पुंजेरिया | 33 |
| 17. | शहीदों के लिए | 41 |
| 18. | वृक्षारोपण | 42 |
| 19. | कुण्डलिया | 43 |
| 20. | पर्यूषण | 44 |


Scanned with OKEN Scanner

| | | |
|---|---|---|
| 21. | क्षमावाणी | 45 |
| 22. | मुक्तक | 46 |
| 23. | आतंक का अंक | 47 |
| 24. | भारत उदित हो गया | 49 |
| 25. | वचने किम् दरिद्रता | 52 |
| 26. | मैं नदी हूँ | 55 |
| 27. | परीक्षा | 57 |
| 28. | मुनादी | 59 |
| 29. | पर्दा | 67 |
| 30. | सनद रहे | 70 |
| 31. | दीपावली 2005 | 72 |
| 32. | शुभकामनाएँ | 74 |
| 33. | निर्दोष इमराना | 76 |
| 34. | सरकारी/असरकारी शिक्षा | 78 |
| 35. | दुर्बलता के आयाम और शमशेर | 85 |
| 36. | मिट्टी और भूख | 89 |
| 37. | मौसम | 93 |
| 38. | हिंसा के विरुद्ध | 97 |
| 39. | ममता | 99 |
| 40. | दया की भीख | 100 |
| 41. | जनचर्चा | 103 |
| 42. | कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध कविताएँ | 107 |
| 43. | पंचज अभियान पर कविताएँ | 110 |
| 44. | ईश्वर और उसके प्रकार | 112 |
| 45. | रघुवर मास्टर के लिए | 116 |
| 45. | बाँझ-गाय | 123 |


Scanned with OKEN Scanner

| | | |
|---|---|---|
| 46. | नियतिचक्र | 125 |
| 47. | परिवर्तन | 126 |
| 48. | अशासकीय संकल्प | 131 |
| 49. | 9 अगस्त | 132 |
| 50. | आखिरी कसम | 134 |
| 51. | हिन्दी दिवस | 137 |
| 52. | मतदान | 139 |
| 53. | कभी तो मरें | 148 |
| 54. | दु:ख की चादर | 144 |
| 55. | यात्रा - एक - आवश्यकता है | 145 |
| 56. | यात्रा - दो - निविदा सूचना | 149 |
| 57. | आब-ए-जम-जम और गंगाजल | 151 |
| 58. | अनुच्छेद सत्तावन | 155 |
| 59. | तुलसीदास | 158 |
| 60. | प्रधानमंत्री को पत्र | 160 |
| 61. | खोज रहा हूँ | 165 |
| 62. | बच्चे ही बच्चे | 167 |
| 63. | कविताओं का बीमा | 171 |
| 64. | भूकम्प | 174 |
| 65. | लंबी कविता | 178 |
| 66. | श्रम दिवस पर | 180 |
| 67. | लाल तिलक | 184 |
| 68. | कुछ दुमदार दोहे | 185 |
| 69. | हो जन-जन में भाईचारा | 186 |
| 70. | आजादी के गुरूजी | 187 |


Scanned with OKEN Scanner

| | | |
|---|---|---|
| 71. | अल्प विराम | 190 |
| 72. | पन्द्रह अगस्त | 193 |
| 73. | नव वर्ष और पोंगल पर्व पर मंगल संदेश | 194 |
| 74. | भ्रमर से गुनगुनाएँ हम | 195 |
| 75. | मेरा बेटा | 197 |
| 76. | नया खून | 199 |
| 77. | मंगल वर्ष | 202 |
| 78. | कुछ दोहे | 207 |
| 79. | आवश्यकता है | 213 |
| 80. | बड़े बाबू (ग़ज़ल) | 215 |
| 81. | कुछ परिभाषाएँ | 216 |
| 82. | होली | 218 |
| 83. | आदिवासी | 220 |
| 84. | रस और उनके स्थायी भाव | 224 |
| 85. | धरती पर इतनी गर्मी | 228 |
| 86. | रचनाओं की गश्त | 229 |


Scanned with OKEN Scanner

# टी.आर. त्रिपाठी ''रूद्र''

आर्तनाद में 'भारत उदित हो गया,' 'निर्दोष इमराना', हिंसा के विरुद्ध, 'हिन्दी दिवस' 'दुःख की चादर', 'बच्चे ही बच्चे' और 'रचनाओं की गश्त' कविताएँ विशेष महत्त्व रखती हैं और एक अलग पहचान रचनाकार को देती हैं। 'भारत उदित हो गया' में ''पैरों में हैं फटी विंवाई, नहीं दिख सकी पीर पराई। बड़े खा रहे रोज मिठाई/छोटे तरसें आँख दिखाई/दरस परस दुर्घटित हो गया। दे खो भारत उदित हो गया।'' इसी तरह 'निर्दोष इमराना' में ''एक नारी फिर छली गई/दोष सिर्फ इतना था कि वह पुरुष नहीं थी/स्त्री थी/एक पत्नी थी/इमराना थी/और इसीलिये वह शिकार हो गई। पुरुष मानसिकता की। स्त्री एक बाई फिर कलंकित हुई।'' 'बच्चे ही बच्चे' में 'उनींदे बच्चे/बीड़ी की पुंगरिया तोपते बच्चे/फटी पेण्ट और बेबटन कमीज पाठशाला जाते बच्चे/टयूब में हवा भरते बच्चे/और नॉजल में थूक लगाते बच्चे/गंदे कपड़े पहने भीख माँगते बच्चे/बच्चे कुछ चाहते हैं/हमसे/आपसे/समाज से। और कविता 'रचनाओं की गश्त में रचनाकार को करना चाहिए गश्त अपने ही घर, पड़ौस, तालुका क्षेत्र की, नहीं अपितु उन्हें पूरे महादेश की समीमाओं के बाहर भी।''

GBO

**ग्लोबल बुक्स ऑर्गनाइजेशन**

*(प्रकाशक एवं वितरक)*

42, एकता अपार्टमेंट, गीता कालोनी, दिल्ली-110031 (भारत)

दूरभाष-011-22469169, 22445526, 9899071610

ई-मेल : rkgpost@gmail.com

Rs. 350/-

ISBN : 978-93-80570-03-7

9 789380 570037

Scanned with OKEN Scanner